17

बीती विभावरी जाग री

(कविता)

बोलना/सुनना	पढ़ना/लिखना	व्याकरण-बिंदु	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• गीतात्मक कविता • काव्य में चित्रात्मकता	• कविता • कारक • सराहना • समासयुक्त पदावली	• मानवीकरण, रूपक अनुप्रास और यमक अलंकार • तत्सम शब्दावली	• प्राकृतिक सौंदर्य से लगाव • उद्‌बोधन का नया आयाम

मूल भाव

जयशंकर प्रसाद के इस गीत में प्रकृति के प्रात:कालीन सौंदर्य को अत्यंत मोहक रूपक में प्रस्तुत किया गया है। रात बीतने पर तारे डूब जाते हैं, आसमान में लालिमा छा जाती है, पक्षियों की चहचहाहट और फूलों की न सुनाई पड़ने वाली सरसराहट होती है, शीतल मंद समीर बहने लगता है– कवि ने इनका अत्यंत सुंदर तथा मानवीकृत वर्णन किया है। बात यहीं पर समाप्त नहीं हो जाती। कविता में प्रकृति की इस प्रात:कालीन गतिशीलता का वर्णन एक सखी दूसरी सखी के सामने कर रही है। इस वर्णन के पीछे सखी को भी जागने, सक्रिय होने का संदेश दिया गया है। कवि ने देशवासियों का भी चेतनायुक्त होने का आह्‌वान किया है।

मुख्य बिंदु

- एक स्त्री द्‌वारा अपनी सखी को संबोधन।
- प्रात:काल का मनोहारी चित्रण।
- प्रात:वेला की हलचल का विवरण, जैसे– पक्षियों के समूह का बोलना, पेड़-पौधों का डोलना, लताओं में लगे फूलों का खिलने लगना।
- प्रकृति में गतिशीलता है, पर सखी सो रही है। उसके सोने पर आश्चर्य प्रकट करना और जागने का आह्‌वान।
- स्वाधीनता के लिए सक्रिय होने का संकेत।
- मानवीकरण, रूपक, अनुप्रास, यमक अलंकार और नाद-सौंदर्य।
- दुरुहतारहित शुद्‌ध साहित्यिक तत्समप्रधान और समासयुक्त भाषा।

आइए समझें

प्रकृति		सखी (मनुष्य)
• बीती विभावरी	अंधकार → प्रकाश	जागरी
• अंबर पनघट....ऊषा-नगरी	निष्क्रियता → सक्रियता	तू अब तक सोई है आली
• खग-कुल...बोल रहा	सन्नाटा → स्वर	अधरों में राग अमंद पिए
• किसलय.....डोल रहा	स्थिरता → गति	अलकों में मलयज बंद किए
• लो यह....रस-गागरी	रिक्तता → रसमयता	आँखों में भरे विहाग री

महत्त्वपूर्ण व्याकरण-बिंदु

- **अलंकार**

  मानवीकरण – 'अंबर पनघट में डुबो रही, ताराघट ऊषा नागरी' और 'लो यह लतिका भी भर लाई मधु-मुकुल नवल रस-गागरी

  – 'अंबर-पनघट में डुबो रही तारा-घट ऊषा नागरी' और

  रूपक – 'मधु-मुकल नवल रस गागरी'

  अनुप्रास – 'खग-कुल कुल-कुल-सा' में 'क' और 'ल' वर्णों की आवृत्ति

  यमक – 'खग-कुल कुल-कुल-सा' में कुल के भिन्न अर्थ

- शुद्ध साहित्यिक तत्समप्रधान पदावलीयुक्त भाषा

क्या जानना ज़रूरी है

- जब कोई कवि प्रकृति-चित्रण करता है, तो, इसके पीछे उसका प्रकृति से लगाव निहित होता है। वह हमसे भी यह अपेक्षा करता है कि हम प्रकृति को उसी लगाव से देखें और उसकी रक्षा करें।
- हिंदी साहित्य में 'छायावाद' एक काव्य-प्रवृत्ति है। इस प्रवृत्ति के अंतर्गत ऐसी अनेक कविताएँ लिखी गईं, जिनमें स्वाधीनता-प्राप्ति के लिए प्रयास करने हेतु भारतीय जनता का आह्वान है।

सराहना

- गीत के पहले बंद में प्रात:वेला के सौंदर्य तथा उसकी हलचल का चित्रण है। मानवीकरण और रूपक अलंकार का उपयोग इस चित्रण को प्रभावशाली बनाता है। प्रकृति के क्रियाकलाप अंध कार से प्रकाश, निष्क्रियता से सक्रियता, सन्नाटे से स्वर, स्थिरता से गति और रिक्तता से रसमयता की ओर जाने का संदेश देते हैं; इसलिए सखी से कहा गया है कि उठो और प्रकृति की तरह तुम भी सक्रिय बनो। उद्‌बोधन के साथ-साथ प्रकृति और स्त्री के सौंदर्य की अभिव्यक्ति की गई है।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- गीत को सस्वर पढ़कर समझने का प्रयास कीजिए।
- गीत में आए बिंबों (चित्रों) और अलंकारों को अच्छी तरह समझिए।
- प्रकृति और सखी के बीच तुलना के बिंदुओं को समझिए।
- गीत के भाषा-वैशिष्ट्य के प्रमुख बिंदुओं को याद कीजिए।

अपना मूल्यांकन करें

1. उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

   इस कविता में कवि किसे जगाना चाहता है?

   (क) ऊषा को (ख) लतिका को
   (ग) धरती को (घ) आली को

2. प्रात:कालीन प्रकृति के विषय में आप क्या अनुभव करते हैं? 20-25 शब्दों में लिखिए।
3. 'प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण हमें प्रकृति-रक्षा के लिए प्रेरित करता है'– इस कथन के पक्ष में अपने विचार 25-30 शब्दों में लिखिए।

योग्यता बढ़ाएँ

- कुछ प्रकृतिपरक कविताएँ पढ़िए।
- कविता के भाव-सौंदर्य को बढ़ाने में अलंकारों के योगदान के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए।
- जयशंकर प्रसाद के जीवन और उनके साहित्य के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए।